ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | July 2021 Issue-03, Vol-01 | 01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

July 2021, Issue-78, Vol-01

अतिथि संपादाक :

१. शिवशेट्टे गोविंद

२. डॉ. राठोड अनिल

३. डॉ. भगवान कदम

४. डॉ. शिंदे प्रकाश

५. डॉ. शेख मुखत्यार

६. डॉ. वारले नागनाथ

७. डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed

Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295.

harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Printing Area

www.विद्यावार्ता.कॉम

YouTube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 7.891 iijif FACTOR

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 3418002

http://www.printingarea.blogspot.com

72) दलित विमर्श
सोनाली अरविंद अवसरमोल ||263

73) दलित चेतना का मार्ग प्रशस्त करनेवाली आत्मकथा –'बलुतं'
डॉ.तांबोळी एस.बी., सातारा ||264

74) किन्नर और उनका संघर्ष
शाहिद हुसैन, बिलासपुर (छ.ग.) ||267

75) सुनीता जैन के काव्य में वृद्ध विमर्श
प्रा.कल्याण शिवाजीराव पाटील, नांदेड ||271

76) 'दौड़' में अभिव्यक्त वृद्धावस्थाविमर्श
डॉ. प्रभा शर्मा, कोटा ||274

77) हिन्दी साहित्य में वृद्ध विमर्श
डॉ. सरोज कुमारी, सीकर ||278

78) "समकालीन हिंदी कहानियों में वृद्ध विमर्श"
डॉ. सुनील एम. पाटिल, शिरपुर, जि. धुलिया. ||280

79) साहित्य और फिल्म में अभिव्यक्त बाल मानस
डॉ. अनिला मिश्रा, आणंद (गुजरात) ||285

80) महादेवी वर्मा की कहानी अलोपी व दृष्टिहीन विकलांगों....
रामगोपाल, मथुरा ||288

81) 'बलिदान' कहानी में कृषक विमर्श
डॉ. बलवंत बी.एस., दहिवडी, जि. सातारा. ||292

82) भारतीय कृषक–जीवन का आईना : गोदान
डॉ. यशोदा मेहरा, कोटा (राज.) ||294

83) हे! अन्नदाता तू भूखा क्यों सोता है?
डॉ. अवधेश कुमार जौहरी, भीलवाड़ा (राज) ||297

84) इक्कीसवीं सदी और भारतीय किसान
प्रदीप कुमार विश्वकर्मा, मऊगंज, मध्य प्रदेश ||300

85) विवेकी राय के उपन्यास और किसान जीवन का यथार्थ
डॉ. शिंगाडे सचिन सदाशिव ||304

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

86) हिंदी उपन्यासों में चित्रित किसानों की सामाजिक समस्या
सुप्राशिष बारिक ||308

87) 'फाँस' उपन्यास में किसान समस्या और आत्महत्याएँ
प्रा. डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार, गढी, जि. बीड ||315

88) सामयिक दौर में पर्यावरण विमर्श की महत्ता एवं.....
डॉ. अशोक अभिषेक, कोडरमा ||318

89) हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श
छगनराव मधुकर जठार, दहिवडी, जिला. सातारा ||321

90) पर्यावरण विमर्श 'काव्य कवि की धड़कनं है तो प्रकृति उसकीआत्मा'
प्रा. डॉ. मनोहर कुमार, नागपुर ||324

91) 'रेड जोन' उपन्यास का समाजशास्त्रीय अध्ययन
एकनाथ गणपती जाधव ||330

92) सत्यप्रकाश के 'जस तस भई सवेर' उपन्यास में दलित स्त्री
प्रा.डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड, जुले सोलापुर, महाराष्ट्र ||334

93) रूपनारायण सोनकर की 'नागफनी' आत्मकथा में सामाजिक चेतना
प्रा.डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड, सोलापुर, महाराष्ट्र ||338

94) आदिवासी वडारों का समाज जीवन
प्रा.डॉ.शर्मिलाबहन सुमंतराय पटेल, जि. भरूच, गुजरात ||341

95) मानवीय संवेदना को परास्त करती क्षुधा
डॉ. सुरेखा जवादे, भिलाई, छ.ग. ||344

96) स्त्रीविमर्श की कथा : अग्निपंखी (उपन्यास) सूर्यबाला
सोलंकी केतनकुमार. वी, आंणद ||347

97) समकालीन हिंदी दलित कविता में सवर्णों के प्रति रोष की अभिव्यक्ति
डॉ संतोष कुमार पांडेय, रायबरेली (उत्तर प्रदेश) ||350

98) भारतीय परिदिर्श्या का साहित्य एवं संस्कृति में दिव्यांग जनो की भूमिका
डॉक्टर विशेश्वर यादव & सपना कुमारी राय, (छत्तीसगढ़) ||357

99) हिंदी दलित विमर्श
सुधा.जे & डॉ.निम्मी.ए.ए, तिरुवनंतपुरम ||363

www.vidyawarta.com/03 http://www.printingarea.blogspot.com

९. वीरेंद्र जैन, डूब ,वाणी प्रकाशन, २०१४, पृ–१२९
१०. कमलाकांत त्रिपाठी, बेदखल, पृ–४२
११. जोतिबा फुले, किसान का कोडा, पृ–७२
१२. कमलाकांत त्रिपाठी, बेदखल, पृ–१२२
१३. राजू शर्मा, हलफनामे, राधाकृष्ण पेपरबैक्स, २००७, पृ–१०४
१४. वीरेंद्र जैन, डूब, पृ–२४–२५
१५. संजीव, फाँस, पृ–५६
१६. वीरेंद्र जैन, डूब, पृ–५१
१७. सं. नामवर सिंह, प्रेमचंद और भारतीय समाज, राजकमल प्र., २०११,पृ–१६४
१८. काशीनाथ सिंह, रेहन पर रग्घू, राजकमल प्रकाशन, २००८, पृ–१३३
१९. डॉ उत्तम भाई पटेल, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यास में कृषक जीवन, पृ–३५

❑❑❑

87

'फाँस' उपन्यास में किसान समस्या और आत्महत्याएँ

प्रा.डॉ. यशवंतकर संतोषकुमार
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, गढी.
तहसिल. गेवराई. जिला. बीड

संजीव हिंदी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा के धनी रचनाकार हैं। उन्होंने कहानी, उपन्यास, नाटक, यात्रा–वृतांत, बाल साहित्य आदि में लेखन करके समग्र साहित्यकार को सिद्ध किया है। जो उन्होंने देखा, सोचा, समझा और भोगा है वही अपनी लेखनी में कलमबद्ध किया है। वे मूलत: मध्यवर्गीय किसान परिवार से हैं।

कथाकार संजीव द्वारा लिखित 'फाँस' उपन्यास की मूल पृष्ठभूमि देशभर में लगभग पिछले दो दशकों से बढ़ रही किसानों की आत्महत्याएँ हैं। इस उपन्यास में महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के नजदीक बनगाँव का चित्रण किया गया है। लेकिन इसमें आंध्र प्रदेश व कर्नाटक के किसानों सहित भारत के उन सभी किसानों की कहानियाँ शामिल हैं। लेखक की सबसे बड़ी विशेषत: यह है कि इस उपन्यास में शुरू से लेकर अंत तक कहीं बिखराव नहीं दिखाई देता है। वो सिर्फ किसान समस्या या उसकी विडंबना की ही बात नहीं करते बल्कि उसके सामाधान का विकल्प भी प्रस्तुत करते हैं। शायद पहली बार प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' के बाद किसानों और मध्यम वर्ग का दर्द तथा कसमसाहट को बड़ी पैनी दृष्टि से उकेरा है।

संजीव के इस उपन्यास में किसान की बुनियादी समस्याओं जैसे बीज बोने से लेकर खाद–पानी तथा घर–परिवार की आर्थिक समस्या एवं उत्पादित फसलों को बेचने की समस्याओं को देखते हुए सहज ही प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास का नायक 'होरी' की याद आती है। संजीव कुछ हद तक प्रेमचंद की

लेखन परंपरा को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। प्रेमचंद ने जिस प्रकार 'गोदान' में 'होरी' के माध्यम से भारतीय किसानों की दयनीय स्थिति को दिखाया है, उसी तरह संजीव ने 'फाँस' उपन्यास में 'शिबू' के माध्यम से क़िसानों की बदहली को दर्शाया है। फर्क सिर्फ इतना है कि होरी खेतों में काम करते–करते अपना प्राण त्याग देता है तथा 'फाँस' उपन्यास का 'शिबू' आर्थिक समस्या का सामना करते–करते अंत में हताश और निराश होकर आत्महत्या करता है। यह आत्महत्या एक किसान की आत्महत्या नहीं है बल्कि भारतीय किसान संस्कृति की हत्या है।

लेखक ने इस उपन्यास में बहुत ही ज्वलंत मुद्दा उठाया है। उपन्यास की कथावस्तु महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के बनगाँव से शुरू होती है। ''भला कोई कह सकता है कि सुखाड के ठनठनाते यवतमाल जिले के इस पूरबी छोर पर 'बनगाँव'जैसा कोई गाँव भी होगा जो आधा वन होगा, आधा गाँव, आधा गीला होगा, आधा सूखा। स्कूल में लड़के के साथ लड़कियाँ भी, जूए में भैंस के साथ बैल भी। जो भी होगा आधा–आधा।''[१] भारतीय किसान को अपनी मेहनत एवं फसल का मुअवजा न कभी परिपूर्ण मिला है, न मिल रहा है। उनके संघर्षमय जीवन में सब कुछ आधा–आधा ही लिखा है। वह अपने खेत को जोतने के लिए एक बैल और उसके साथ भैंस को रखने के लिए विवश हैं। प्रकृति भी किसानों के साथ छल कर रही है। कभी सूखा, तो कभी धुआधार बारिश होती है, जिससे फसल बरबाद होती है। सुखा एवं धुआधार बारिश की वजह से किसान कृषि से दूर हो रहे है। उपन्यास में शिबू खेती की दशा देखकर मायूस है। वह विवश होकर कहता है कि– ''अकेला होता तो चला भी जाता कहीं...नागपुर, नासिक, मुम्बई, दिल्ली. ..लेकिन ये दो–दो मुलगियाँ, बायको इन सबको लेकर कहाँ जाऊ?''[२] इसका जवाब देते हुए बेटी कहती है ''तुम ही नहीं, इस देश के सौ में से चालीस शेतकरी आज ही खेती छोड़ दे मगर उनके पास कोई दूसरा चारा हो। ८० लाख ने तो किसानी छोड़ भी दी।''[३] किसान कृषि से दूर हो रहा है। शिबू खेती की दशा देखकर मायूस है। वह कोई दूसरा मार्ग अपनाना चाहता है। सही मायनों में भारतीय किसानों का खेती करने से रूह कांप रही है। वह साल–दर–साल घाटे का ही सामना कर रहा है। तथा अपना और अपने परिवार का पोषण करने के लिए खेती के आलावा दूसरा मार्ग खोजने के लिए विवश है।

'फाँस' उपन्यास में शुरू से लेकर अंत तक देखा जाए तो किसानों के साथ भारतीय व्यवस्था छल करती हुई दिखाई देती है। मंहगाई दिन–प्रतिदिन बढ़ रही है। पहले किसान फसल बोने के लिए अपने घर में ही रखे बीज का प्रयोग करते थे। कुछ दशकों से उत्पादन की वृद्धि के लिए नए–नए खादों तथा विभिन्न बीजों का प्रयोगकिया जाने लगा जिससे खेतों की उर्वर शक्ति धीरे–धीरे समाप्त होती गई । फलस्वरूप किसान बैंकों तथा ग्रामीण स्तर के सूदखोरों से कर्ज लेने के लिए विवश होते गए। सूखा तथा बाढ़ से फसल अच्छी न होने से किसान इन कर्ज को चुका नहीं पाता। दिन–प्रतिदिन कर्ज की चपेट में किसान ध ंसता जा रहा है। इन्हीं समस्याओं की मकड़जाल में फंसकर किसान आत्महत्या का रास्ता अपना रहा है। भारत में बी. टी. कॉटन कपास की खेती करने वाले किसान सबसे ज्यादा इस त्रासदी का शिकार हुए है। इस कपास के बीज ने महाराष्ट्र के साथ–साथ भारतीय किसानों को प्रभावित किया था, लेकिन दूसरे–तिसरे साल ही इस बीज ने अपनी नपुंसकता दिखा दी। इसकी वजह से कपास की भारी मात्रा में खेती करने वाले किसानों के सामने आर्थिक समस्या खड़ी हुई। उपन्यास में अमरावती महिला मंडल की महिला किसान कपास की खेती से परेशान होकर फसलों को बदलने की बात करती हुई कहती है कि– ''कापूस में क्या है? आत्महत्या! हमने तो ताई कापूस छोड़कर उस (ईख) की शेती करने का निर्णय ले लिया है। आप बताओं सबको, सबका भला हो जाए ।''[४]

संजीव ने दो दशकों पहले आया हुआ कपास का बी. टी. कॉटन बीज को लेकर चिंता व्यक्त की है। इस नपुंसक बीज ने देशभर के किसानों को तबाह किया है। अमला गाँव की आशा कपास को उचित मूल्य न मिलने के कारण आत्महत्या करतीहै। साईपुर गाँव के किसान सरकार से लिखित रूप में आत्महत्या

करने की अनुमति मांगते हुए कहते है कि–"सरकार कृपया हम किसानों को यह बताये कि आत्महत्या करते वक्त किन–किन बातों का खयाल रखा जाए– अब और कैसे की जाती है आत्महत्या? किस पंडित से पूँछकर...? यह भी सिखाया जाए कि कैसे लिखी जाती है सुसाइट नोट !"[५] संजीव ने भारतीय व्यवस्था पर बड़ी चोट की है। किसान कर्ज की जाल में फंस कर आत्महत्याएं कर रहे है। प्रकृति भी किसानों के साथ छल कर रही है। कभी सूखा, तो कभी बाढ़! यही सिलसिला हर साल जारी है।

संजीव ने इस उपन्यास में बताया है कि किसान किस तरह अपनी छोटी–छोटी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कर्ज लेता है और किस प्रकार ये लिया गया कर्ज उसके लिए ही फाँस बन जाता है। सुनील जैसा जागरूक किसान किसानों को कर्ज लेने से तथा आत्महत्या करने से रोकता है– "खबरदार जो किसी ने कर्ज लिया, खबरदार जो किसी ने आत्महत्या के लिए कदम बढ़ाये । कोई भी खूद–ब–खूद यमराज के पास नहीं जाएगा।"[६]संजीव ने सुनील जैसे धैर्यशील एवं जागरूक किसान को चित्रित करके आत्महत्या जैसी विदारक घटनाओं को कम करने का प्रयास किया है। लेकिन उपन्यास के अंत तक सुनील भी कृषि तथा कर्ज से तंग आकर आत्महत्या कर लेता है। शकून कहती है कि– "इस देश का किसान कर्ज में ही जन्म लेता है, कर्ज में ही जीता है, कर्ज में ही मर जाता है।"[७]

वर्तमान समय में किसान आत्महत्याओं का सिलसिला जारी है। आत्महत्याओं के आंकड़े दिन–प्रतिदिन बढ़ रहें हैं। इस स्थिति को बयाँ करते हुए संजीव कहते हैं कि– "बल्कि मरना तक मुक्ति है और जीना एक बंधन। आये दिन तो आत्महत्या की खबरें सुनते रहते हैं। जिधर देखो उधर, कोई पेड़ की डाल पर लटका पड़ा है, कोई कुएँ में गिरा पड़ा है तो कोई कीटकनाशक खाकर मुँह से झाग फेंक रहा है।" एक तो चौबीस साल का जवान, क्या तो नाम था, हाँ शंकर मेश्राम। माँ ने जेवण परोसा– बोला खेत से बैलों की रस्सी से नीम के पेड़ पर लटका पड़ा था।"[८] संजीव ने जो देखा है, वही 'फाँस' में रेखांकित किया है। देशभर में देखा जाए तो किसान आत्महत्याओं का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। किसी मंत्री, सांसद, विधायक तथा किसी पूँजीपतियों ने आत्महत्या की है, यह कभी किसी वृत्तपत्र में ना पढ़ा है, ना देखा है, ना सुना है। क्या आत्महत्या करना सिर्फ किसान के भाग्य में लिखा है? इसका जिम्मेदार कौन है? भारत एक कृषि प्रधान देश है तो कृषि का नायक आत्महत्या क्यों कर रहा है? यह आत्महत्याएं, आत्महत्याएं नहीं है बल्कि हत्याएं है। इन्हीं प्रश्नों को उपस्थित करके संजीव ने किसान वर्ग को सचेत किया है। वह कृषि की दुर्दशा देखकर खेती छोड़ने के लिए विवश है। सदा घोषणा करता है कि वह अगले साल खेती छोड़ रहा है। सिंधू अपनी बेटी विद्या का विवाह किसान से नहीं बल्कि मजदूर से करती है। धनौर गाँव का ओदिल्लू अपनी पाँच एकड़ जमीन बेचकर प्यून की नौकरी करता है। कुल मिलाकर कहा जाए तो कृषि का नायक कृषि से हार मानककर दूर हो रहा है।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

१. फाँस, संजीव, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण २०१५. पृ– ९
२. वहीं, पृ– १७
३. वहीं, पृ– १७
४. वहीं, पृ– १५३
५. वहीं, पृ– ११६
६. वहीं, पृ– २५
७. वहीं, पृ– १५
८. वहीं, पृ– ४३

□□□

88

सामयिक दौर में पर्यावरण विमर्श की महत्ता एवं इस संदर्भ में शिक्षा की भूमिका

डॉ. अशोक अभिषेक
असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
जगन्नाथ जैन महाविद्यालय, कोडरमा

शोध–सार :

मानव ने अपने बुद्धि के बल पर सृष्टि के रहस्यों को समझने का प्रयास किया और अपने इस गवेषणात्मक प्रगति के साथ ही साथ प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए प्रकृति का इस्तेमाल अपने विकास और प्रगति के निमित्त करता रहा। नये नये खोजों से मानव अपने आप को समृद्ध करता गया साथ ही प्रकृति का अपनी सुविधानुसार उपयोग भी करता रहा। आबादी के बढ़ने का दुष्परिणाम हुआ कि मानव को उसके जरूरत की पूर्ति हेतु अधिक संसाधन की आवश्यकता पड़ने लगी। फलतः मानव द्वारा प्रकृति के दोहन की शुरूआत हुई। विकास के अन्धानुकरण ने इस समस्या को और भी विकराल किया। अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर मानव ने भविष्य की चिंता किये बिना प्राकृतिक संसाधनों का निरंतर दोहन जारी रखा जिससे वनों को नुकसान हुआ, अनावृष्टि होने लगी, रेगिस्तानी क्षेत्र बढ़ने लगा, इन जैसे अनेकों समस्याओं ने विकराल रूप लेना आरंभ कर दिया, परिणामस्वरूप हमारा पर्यावरण व पारिस्थितिकी तंत्र बुरी तरह से असंतुलित हो गया। कोरोना महामारी ने मानव के समक्ष इतनी समस्याएं उत्पन्न कर दी है जिसका समाधान करना एक टेढ़ी खीर साबित हो सकता है। शिक्षा के माध्यम से ही इन समस्याओं को सुलझाया जा सकता है। अतएव आज एक बार पुनः शिक्षण संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण हो गयी है। शिक्षा के माध्यम से अवश्य ही हम इन समस्याओं का समाधान कर सकेंगे।

कुंजी शब्द – पर्यावरण–विमर्श, शिक्षा, प्रदूषण, भावात्मक पक्ष, क्रियात्मक पक्ष

प्रस्तावना –

पर्यावरण प्रदूषण व पारिस्थितिकीय–असंतुलन एक विश्व–व्यापी समस्या बन चुकी है। माना जा सकता है कि यह उन मानवीय गतिविधियों का दुष्परिणाम है, जिसे मानव ने सदियों से विकास की प्रक्रिया के तौर पर अपनाया हुआ है। इन दिनों पर्यावरण के दोहन की दिशा में बेहद तीव्र गति से वृद्धि हुई। हम भलि–भांति इस बात से परिचित है कि हमारे चारों ओर विद्यमान प्रकृति की गोद में ही मानव जीवन फल–फूल सकता है। हम इस बात से भी अवगत हैं कि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करने का दुष्परिणाम अंततः हमें ही भुगतना होगा, बावजूद इसके हम निरंतर प्रकृति को नुकसान पहुंचाते जा रहे है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कोरोना महामारी ने मानव को पुनः इस दिशा में सोचने को विवश किया है। भारत की संस्कृति आरंभ से ही "वसुधैव कुटुंबकम" की भावना से ओत–प्रोत रही है। मानव का आरंभिक इतिहास पर्यावरण के इर्द–गिर्द केंद्रित रहा है। आज भी हमारे आदिवासी समाज वनीय जीवन जीते है। हमारे संस्कृति का अधिकांश भाग प्रकशति से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है। हमारे पर्व–त्योहार हों, आदिवासी समाज में विद्यमान टोटम, या कि हमारी उपासना–शैली या फिर हमारे आर्थिक–क्रियाकलाप ये सभी प्रकृति से गहरे रूप में जुड़े रहे है। शायद ही प्रकृति का कोई अंश होगा जिसकी उपासना हमारे संस्कृति में न की जाती हो और यही हमारी प्रकृति के साथ जुडाव व संवेदना का भी परिचायक है। यह एक विचारणीय व चिंताजनक विषय बन जाता है कि जिस संस्कृति का इतना गहरा जुडाव प्रकृति के साथ रहा है, उस समाज के समक्ष आज प्राकृतिक प्रदूषण जैसी समस्या उत्पन्न हो गयी है।

अथर्ववेद में वृक्षों व वनों को संसार के समस्त सुखों का स्रोत माना गया है। वैदिक काल में शिक्षा वनों के बीच बसे गुरुआश्रम में प्रकृति के बीच दी